आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13
सृष्टि संवत् 1960853114
विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

ओ३म
ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

॥ओ३म्॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र
E-mail : aryapsharyana@gmail.com (दूरभाष : 01262-216222) सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर
वर्ष : 10 अंक : 4 रोहतक, 21 जून, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

क्यों जानें हम उस परमात्मा को?

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय॥
यजु० 31/18

पदार्थ—हे जिज्ञासु पुरुष! (अहम्) मैं जिस (एतम्) इस पूर्वोक्त (महान्तम्) महान् अर्थात् बड़े-बड़े गुणों से युक्त (आदित्यवर्णम्) सूर्य के तुल्य प्रकाशमान (तमसः) अन्धकार वा अज्ञान से (परस्तात्) पृथक् वर्तमान (पुरुषम्) सर्वत्र पूर्ण परमात्मा को (वेद) जानता हूँ (तम् एव) उसी को (विदित्वा) जानकर आप (मृत्युम्) दुःखों, कष्ट, क्लेशों को अति, (एव) उल्लंघन कर जाते हो, पार कर जाते हो, किन्तु (अन्यः) इससे भिन्न (पन्थाः) मार्ग (अयनाय) अभीष्ट स्थान मोक्ष के लिये (न विद्यते) नहीं विद्यमान है।

भावार्थ—यदि मनुष्य इस लोक और परलोक के सुखों की इच्छा करें तो सबसे महान् स्वयं प्रकाशमान और आनन्दस्वरूप अज्ञान अन्धकार से दूर वर्तमान परमात्मा को जानकर ही मरणादि अथाह दुःखसागर से पृथक् हो सकते हैं। यही सुख का मार्ग है। इससे भिन्न कोई भी मनुष्यों की दुःखों से मुक्ति का मार्ग नहीं है।

वेद को जानने वाला ज्ञानी पुरुष कहता है कि मैं उस महान् पुरुष अर्थात् परमपिता परमात्मा को जानता हूँ। कैसा है वह? वह प्रकृति और अज्ञान अन्धकार से परे करोड़ों सूर्यों की भाँति प्रकाशित देवों का देव महादेव ज्ञानप्रकाश से युक्त है। उसको जानकर ही कष्टों, क्लेशों, निर्धनता, अपमान एवं अज्ञानादि विपत्तियों से छुटकारा मिल सकता है। उसके जाने बिना दुःखों से छूटने का और कोई मार्ग नहीं है। इसलिए हमें उस परमात्मा को जानने की आवश्यकता है। परन्तु हम केवल (प्रकृति) जड़ पदार्थों अर्थात् धन-सम्पदा, भूमि, शक्ति और भौतिकवाद के सहारे विपत्तियों से बचना चाहते हैं, ऐसा सम्भव नहीं हो सकता। जब तक मनुष्य भौतिकवाद के साथ आध्यात्मवाद को नहीं जोड़ता अर्थात् अपनी आत्मा में परमात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव का समावेश नहीं कर लेता, उसकी आज्ञापालन को अपना परम कर्त्तव्य समझकर परमात्मा द्वारा बताये गये मार्ग का अनुगामी नहीं बन जाता तब तक दुःखों से छूटकर सुख, शान्ति प्राप्त करने का सवाल ही पैदा नहीं होता। आज का मानव वैज्ञानिक चमत्कारों को देखकर विज्ञान की चकाचौंध में अपने आत्मा की ध्वनि को ही सुनना भूल गया, वह परमात्मा को क्या जानेगा? इसलिये मन्त्र में कहा गया है कि यदि दुःखों से छूटना और सुखों को प्राप्त करना चाहते हो, तो उस परम पुरुष को जानना भी आवश्यक है। अब प्रश्न पैदा होता है कि उस परमात्मा को कैसे जानें?

☐ **देवराज आर्य**, सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक,
आर्य टैण्ड हाउस, रोहतक मार्ग, जीन्द

कौन जान पाते हैं उसको?

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये॥
यजु० 31/9

पदार्थ—हे मनुष्यो! (ये) जो (देवाः) विद्वान् (च) और (साध्याः) योगाभ्यास आदि साधन करते हुए (ऋषयः) मन्त्रार्थ जानने वाले ज्ञानी लोग जिस (अग्रतः) सृष्टि के पूर्व (जातम्) प्रसिद्ध हुए (यज्ञम्) सम्यक् पूजने योग्य (पुरुषम्) पूर्ण परमात्मा को (बर्हिषि) मानस ज्ञान यज्ञ में (प्र औक्षन्) धारण करते हैं, वे ही (तेन) उसको उपदेश किये हुए वेद से और (अयजन्त) उसका पूजन करते हैं, (तम्) उसको तुम लोग भी जानो।

भावार्थ—उस परम पुरुष परमात्मा को जो सृष्टि से पूर्व विद्यमा था, जो सदा से पूजने योग्य, भक्ति करने और हृदयाकाश अर्थात् ज्ञान यज्ञ के द्वारा जानने योग्य है जिसको विद्वान्, योगी अर्थात् योग-साधना करने वाले तथा ऋषि लोग ध्यान और पूजन के द्वारा जानने का प्रयत्न करते हैं, उसको हम लोग भी जानें।

उपरोक्त वेदमन्त्र में उस परम पुरुष को जानने के लिये देवा, साध्या तथा ऋषयः बनने के लिए प्रेरणा की गई है। अब हम इन शब्दों पर विचार कर उसे जानने का प्रयत्न करेंगे।

कौन होते हैं देव?

देव—दिव्य गुण, कर्म, स्वभाव वाले विद्वानों को '**देव**' कहा जाता है। '**देवो दानाद् वा**' विद्या का दान करने से 'विद्वान्' देव है। शतपथ में कहा है—'**विद्वांसो हि देवाः**' विद्वानों को देव कहते हैं। इस प्रकार वेदज्ञान से प्रकाशित और वेदविद्या का प्रचार करने वाले, ईर्ष्या-द्वेष, छल-कपट आदि से रहित, निर्लोभी, सत्याचरण द्वारा संसार का कल्याण करने वाले विद्वानों को '**देव**' कहा जाता है। जो दूसरों को सुख व आनन्द देता है। जो सदा सत्य के मार्ग पर चलता है। जो काम, क्रोध, मोह और लोभ से परे हैं। जो प्रतिदिन यज्ञ करते तथा तन, मन, धन से सामर्थ्यानुसार संसार के भले के लिये रत रहते हैं, पुण्यकर्मों के द्वारा ब्रह्म का दर्शन पाते हैं, वे देवता हैं।

दूसरों के दुःख को दूर कर उन्हें सन्मार्ग पर ले चलने वाले सभी देव कहाते हैं। यम-नियम का पालन करता हुआ मानव यदि सत्य-ज्ञान और सत्य-कर्म के मार्ग पर आगे बढ़ता रहे तो देवत्व को प्राप्त कर लेता है। उपनिषद् हमें बताती है कि दमन, दान, दया के द्वारा मनुष्य 'देव' बन जाता है। इन्द्रियों का दमन अर्थात् उन्हें मन के वशीभूत करके ज्ञान, योग तथा परोपकार के मार्ग से चलने को प्रेरित करें।

मनु महाराज इन्द्रिय संयम के बारे में लिखते हैं कि—

इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन दोषमृच्छः य संशयम्।
संन्नियम्य तु तान्येव ततः सिद्धि नियच्छति॥
मनु० 2/93

जीवात्मा इन्द्रियों के साथ मन लगाने से निःसन्देह दोषी हो जाता है और उन दस इन्द्रियों को वश में करके ही पश्चात् सिद्धि को प्राप्त होता है। महर्षि दयानन्द इस विषय में लिखते हैं कि—जो इन्द्रियों के वश में होकर विषयी, धर्म को छोड़कर अधर्म करनेहारे अविद्वान् हैं, वे मनुष्यों में नीच जन्म बुरे-बुरे दुःखरूप जन्म को पाते हैं। इसलिये देव बनने के लिये इन्द्रिय संयम आवश्यक है। देव बनने के लिये दान देना भी एक आवश्यक कर्म है। धन, बल, बुद्धि, ज्ञान आदि जो भी वस्तु आपके पास हैं उसको सुपात्र को देना वास्तव में दान है। इसी प्रकार दया करना अर्थात् प्राणिमात्र को आत्मवत् समझकर उसके प्रति कल्याण की भावना रखना दया है। इस प्रकार देव बनकर हम उस परमात्मा को जानन का प्रयत्न करें।

साधक भी उस परम लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं जिसको वेद में परम उद्देश्य बताया—

साधक—जो परमात्मा की प्राप्ति के लिये साधन करते हैं उन्हें साध्य या साधक कहते हैं। साधना का अर्थ योग साधना है। योगी लोग योग-साधना करते

क्रमशः पृष्ठ दो पर....

रससिद्ध संस्कृत कवि डॉ. धर्मवीर कुण्डू तथा उनकी कृतियाँ

❑ डॉ० भवानीलाल भारतीय, 315 शंकर कॉलोनी, श्रीगंगानगर

(महाकवि वाल्मीकि ने आदिकाव्य रामायण की रचना कर संस्कृत भाषा में महाकाव्य लेखन का सूत्रपात किया। राम जैसे आदर्श धीरोदात्त चरित के शील, शक्ति और सौन्दर्य को उन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा ने अधिक तेजस्वी तथा दीप्त बनाया। तब से लेकर अद्यपर्यन्त आदर्श महापुरुषों पर केन्द्रित सैकड़ों काव्यों का सृजन हो चुका है। भारतीय नवजागरण के आद्य सूत्रधार ऋषि दयानन्द के आदर्श चरित को लेकर विगत में अनेक प्रयास हुए हैं। महाकवि अखिलानन्द शर्मा रचित 'दयानन्ददिग्विजय' तथा महाराष्ट्र के कवि पं० मेधाव्रताचार्य रचित 'दयानन्ददिग्विजय' पर्याप्त चर्चित हैं। इसी श्रेणी में हरयाणा के गाँव टिटौली (रोहतक) निवासी डॉ० धर्मवीर कुण्डू का नाम आता है जिन्होंने 'दयानन्द-भास्करोदय' शीर्षक से सोलह सर्गों में समाप्त संस्कृत महाकाव्य की रचना की है।)

यों तो साहित्यशास्त्रियों ने काव्य रचना के लिए और विशेषत: महाकाव्य रचना के उपयुक्त मानदण्डों की स्थापना की है तथापि कवि को यह स्वतंत्रता प्राप्त है कि वह इन नियमों का स्वरुचि के अनुसार ही पालन करे। दयानन्द भास्करोदय का मुख्य छन्द अनुष्टुप् हैं। यह छन्द सर्वादिक सरल है तथा इसकी रचना भी कष्टकारक नहीं होती। यही कारण है कि हमारे प्रमुख ऐतिहासिक ग्रन्थ रामायण, महाभारत तथा अनेक पुराणादि ग्रन्थों में इसी छन्द का प्रयोग हुआ है। मूलशंकर (दयानन्द का पूर्वाश्रम का नाम) के जन्म तथा उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं का रसात्मक विवरण देने के पश्चात् कवि ने कुछ अध्यायों में अष्टांग योग, सुभाषित, वैदिक सूक्तियाँ, प्रेरक प्रसंग, प्राणायाम महत्त्व, काम निंदा आदि विषयों पर अपने श्लोकबद्ध विचार रखे हैं।

इस महाकाव्य की विषयवस्तु के विषय में निवेदन है कि लेखक को चाहिए था कि वह दयानन्द चरित पर कलम उठाने के पहले दयानन्द के कुछ प्रामाणिक जीवनचरितों का गम्भीर अनुशीलन करता। पं० लेखराम तथा पं० देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने ऋषि जीवन लेखन में जितना श्रम किया है, वह अन्य कोई नहीं कर सका। मैंने 1983 में दयानन्द के उक्त प्रामाणिक जीवन चरितों का आधार लेकर एक बृहद् जीवन चरित **नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती** लिखा था। इसका द्वितीय संस्करण हिंडौन (राजस्थान) के घूड़मल प्रहलादकुमार ट्रस्ट ने 2009 में प्रकाशित किया है। ध्यान रहे कि विगत में दयानन्द क्ह्य अमल धवल चरित को विकृत करने, दूषित करने तथा उसमें अनेक कल्पित कथाओं, मिथ्या उपाख्यानों तथा अतिशयोक्ति पूर्व घटनाओं को मिश्रित करने के अनेक जघन्य प्रयास भी किये

शेष पृष्ठ सात पर....

क्यों जानें हम उस परमात्मा को ?..... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

हैं। योग के आठ अंग हैं—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। इसके अनुसार चलने से मनुष्य ईश्वर का साक्षात्कार कर सकता है। यम, नियम योग की नींव हैं। इसके पालन के बिना प्राणायाम और ध्यान से ही केवल उसकी प्राप्ति संभव नहीं है। पतञ्जलि ऋषि ने योग का लक्षण किया है कि '**योगश्चित्तवृत्तिनिरोध:**' चित्त की वृत्तियों के निरोध को योग कहते हैं। पुन: कहा है कि '**अभ्यासवैराग्याभ्यां तन्निरोध:**' अभ्यास और वैराग्य के द्वारा वृत्तियों का निरोध होता है। सामान्य लोगों के लिये दैनिक क्रिया योग का सूत्र दिया है कि '**तप: स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोग:**' समाधि सिद्धि के लिए प्रतिदिन तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान करें, क्योंकि इसके बिना जन्म-जन्मान्तर की वासनायें दूर नहीं होती। योग० 1/16 पर व्यासभाष्य में स्पष्ट बताया गया है कि '**ज्ञानस्यैव पराकाष्ठावैराग्यम्**' बिना ज्ञान और अभ्यास के वृत्तियों का निरोध नहीं हो सकता। वृत्ति निरोध होने पर ही समाधि सिद्धि होती है।

बिना योगसाधना किये केवल सुनने मात्र से कोई योगी नहीं बन सकता। योगाभ्यासी के लिये तीन अनादि पदार्थों का ज्ञान तथा ईश्वर के स्वरूप को जानना अत्यन्त आवश्यक है। ईश्वर क्या है ? '**क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्ट: पुरुषविशेषईश्वर:**' योग० 1/24 अविद्यादि क्लेश, शुभाशुभ कार्य, उन कर्मों का फल, फल भोग से बने संस्कार, इन सबसे जो सर्वदा रहित है, वह पुरुष विशेष ईश्वर है। जो केवल चेतन वस्तु है। '**तस्य वाचक: प्रणव:**' योग० 1/27 उसका वाचक शब्द '**ओ३म्**' है। '**तज्जपस्तदर्थभावनम्**' योग० 1/28 उसी का जप तथा उसी के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार अपना आचरण भी बनाना चाहिये। इस प्रकार साधक बनकर महर्षि पतञ्जलि द्वारा बताये गये योग मार्ग पर चलकर उस परम पुरुष का अपने निर्मल हृदय में साक्षात्कार किया जा सकता है। उसके जाने बिना '**नान्य: पन्था विद्यतेऽयनाय**' इन विघ्नों को दूर करने का और कोई उपाय नहीं है।

उस जगत्-नियन्ता को जानने के लिए हम देव या साधक बनें। इसके लिए हम दैवी-सम्पदा के स्वामी बनें। गीता में भी यही बताया गया है कि—

अभय सत्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यस्थिति: ।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ।। गीता 16/1

यह सत्वसंशुद्धि क्या है?

अन्त:करण की निर्मलता और विशालता तथा ज्ञान और ध्यान में निरन्तर दृढ़ स्थिति, सात्त्विक दान, इन्द्रिय दमन, विद्वानों का सत्कार, अग्निहोत्रादि उत्तम कर्मों का करना, वेदादि आर्षग्रन्थों का स्वाध्याय, धर्म के लिये कष्ट सहन अर्थात् तप एवं ईश्वरोपासना दैवी सम्पदा है।

अपने दु:ख में रोने वाले, मुस्कुराना सीख ले।
दूसरों के दर्द में भी, आँसू बहाना सीख ले।
जो खिलाने में मजा है, वह खाने में नहीं,
जिन्दगी में तू किसी के काम आना सीख ले।

यजुर्वेद के मन्त्र '**तमेव विदित्वाति मृत्युमेति**' में बताया गया है कि उस ज्योति स्वरूप को जानने के लिये देव, साधक या ऋषि बनें। वही उसके दर्शन कर सकते हैं। उसके जाने बिना कभी भी मृत्यु आदि दु:ख से छुटकारा नहीं हो सकता। देव और साधक के विषय में कितनी ही बातें हमारे सामने आई।

अब 'ऋषि' कौन हैं?

ऋषि सबसे उच्च स्तर का विद्वान् व्यक्ति होता है। वह वेदमन्त्रों का द्रष्टा, धर्म और ईश्वर का साक्षात्कार करने वाला, आप्तपुरुष ऋषि कहलाता है। वह वेद का ज्ञाता, वेदमन्त्रों का गूढ़ ज्ञान को प्रत्यक्ष कराने वाला होता है। इसी प्रकार '**साक्षात्कृतधर्माण: ऋषयो: बभूव:**' ऋषि धर्म और ईश्वर के साक्षात्कर्त्ता होते हैं।

सब विद्याओं को पढ़ के जो पढ़ाना है '**ऋषिकर्म**' कहाता है। जो सब विद्याओं को जानकर, सबको पढ़ाता है, उसको '**ऋषि**' कहते हैं। इसी के साथ वेद में आया है कि '**ऋषि: स: यो मनुर्हित:**' जो मनुष्यमात्र का हित चाहते हैं और करते हैं वे ऋषि हैं। जो वेद पढ़कर भी मनुष्यमात्र का हित नहीं सोचता और न हित करता है वह ऋषि नहीं हैं, वह केवल साक्षर हैं। महाभारत काल के पश्चात् धीरे-धीरे वेद विद्या लुप्त हो गई। वेदार्थ ज्ञान न रहने के कारण लोग ईश्वर, जीव, प्रकृति तीन अनादि पदार्थों को भूलकर ईश्वर के चेतन, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, न्यायकारी एवं सच्चिदानन्द स्वरूप के स्थान पर जड़-मूर्तियों की पूजा करने लगे। विषय था कि उस निराकार, चेतन स्वरूप को जानकर ही दु:खों से छुटकारा मिल सकता है। अब कौन बताये उस परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग?

हजारों वर्षों के बाद मूलशंकर नाम के बालक के मन में भी 'मृत्यु' क्या है ? इससे बचने का उपाय तथा सच्चा शिव क्या है ? यह जानने की इच्छा तीव्र हो उठी। आगे चलकर यही बालक आधुनिक युग के 'ऋषि' बनकर संसार के समक्ष आये। उन्होंने वेदों का भाष्य किया तथा अपना सारा जीवन वैदिक धर्म का प्रचार, एक निराकार, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर की उपासना, योगसाधना, पञ्चमहायज्ञों द्वारा गृहस्थ सुधार, वर्णाश्रम व्यवस्था द्वारा मानव कल्याण, देशोद्धार, अंधविश्वास उन्मूलन, स्त्रीशिक्षा आदि अनेक समाज सुधार के कार्य किये। अन्त में संसार के समस्त लोगों के उद्धार और सुधार के लिये अपना जीवन समर्पित कर गये। परमात्मा करे हम भी देव, साधक या ऋषि बनकर उस परमशक्ति को जानें और मृत्यु आदि दु:खों से छूटकर अपना मानव जीवन सफल बना जावें।

ओ३म्

उपासक का सामाजिक जीवन

-: वेद-मन्त्र :-

उदु त्ये मधुमत्तमा गिर स्तोमासः ईरते।
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजन्यन्तो रजा इव॥

(साम० 9/251)

शब्दार्थः=(त्ये) वे, (स्तोमास:) स्तुति करने वाले होते हैं निश्चय से (मधुमत्तमा:) अत्यन्त मधुर (गिर:) बाणियों को (उदीरते) उच्चारण करते हैं (स्त्राजित:) क्रोध को जीतते हैं (धनसा) दीनों को दान देते हैं (अक्षितोतय:) शरणागतों का नाश नहीं होने देते हैं (वाजयन्त:) प्रभु की अर्चना करते हैं (रथा इव) प्रसन्नता अनुभव करने वाले रथी के समान हर्षपूर्वक आगे बढ़ते हैं।

भावार्थः=प्रभु का सच्चा उपासक बनूँ। मेरे में सदैव माधुर्य बना रहे।

व्याख्या=जीवन यात्रा में सफल होने के लिये सामाजिक जीवन का उत्तम होना अत्यन्त आवश्यक है। वाणी की मधुरता ही सामाजिक जीवन की उत्तमता का साधन है। उपासक का वाणी पर संयम हो जाता है। दूसरा व्यक्ति क्रोधित हो जाता है तो भी वह उपासक मधुर वाणी का ही उच्चारण करता है। उसके मुख से कटु शब्द का उच्चारण शायद ही कभी होता हो। भक्त सदैव दूसरे की स्तुति करता है। किसी की निन्दा नहीं करता। वे दीनों को दान देने में प्रसन्नता अनुभव करता है। जहर देने वाले तथा हत्यारे को भी क्षमा दान देता है। इसीलिये जब तक सूर्य और चन्द्रमा रहते हैं उसका नाम भी अमिट रहता है। जीवन प्राप्त करके दो ही कार्य करने योग्य हैं। वेदज्ञान की प्राप्ति और तदनुसार जीवन। यही कार्य सामाजिक जीवन को सफल बनाता है। उपासक ही इस कठिनतम कार्य में सफल होता है। सामाजिक उत्तम जीवन ही मनुष्य को चमकाता है। यश प्रदान करता है। जीवन को सुगन्धित तथा अनुकरणीय बनाता है। इसके लिये **'ईश्वरप्रणिधानद्वा'** का पालन करें। **'अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में। है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में॥'** इस पद्य को सदैव बोलता रहे तथा तदनुसार चलता रहे। आर्यसमाज क्रान्तिकारी संस्था है। आन्दोलन का नाम ही आर्यसमाज है। राष्ट्रमण्डल के खेलों में गोमांस का बन्द कराया। संस्कृत आन्दोलन तथा गोसेवा आयोग बनाने का आन्दोलन आदि सभी आन्दोलन ईश विश्वास पर सफल हुये। करौंथा आन्दोलन तो पहाड़ के साथ टक्कर मारने के समान था। इस कठिनतम कार्य में भी ईश्वर ने सफलता प्राप्त कराई। यह उस महान् देव की महती कृपा का फल है।

पढ़िये—

मन, वचन, कर्म से एक होना सफलता पैर चूमेगी।
अधिक न बोले डोलेगा तो भी दुनिया चौतरफा झूमेगी॥
होगा जगत् में रोशन यही तो तू चाहता है।
बैठेगा गोद में उसकी जिसको तू रोज गाता है॥
न होगी तनिक भी हानि पर-पीड़ा में जो कूदेगा।
स्वार्थ आ गया किञ्चित् बीच मझधार डूबेगा॥

—आचार्य बलदेव

गृहस्थाश्रम का व्यवहार

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास ये चार आश्रम कहाते हैं। इनमें से पाँच वा आठ वर्ष की उमर से अड़तालीस वर्षपर्यन्त प्रथम ब्रह्मचर्याश्रम का समय है। वह सुशिक्षा और सत्यविद्यादि गुण ग्रहण करने के लिए होता है। दूसरा गृहाश्रम जो कि उत्तम गुणों के प्रचार और श्रेष्ठ पदार्थों की उन्नति से सन्तानों की उत्पत्ति और उनको सुशिक्षित करने के लिए किया जाता है। तीसरा वानप्रस्थ जिससे ब्रह्मविद्यादि साक्षात् साधन करने के लिए एकान्त में परमेश्वर का सेवन किया जाता है। चौथा संन्यास जो कि परमेश्वर अर्थात् मोक्षसुख की प्राप्ति और सत्योपदेश से सब संसार के उपकार के अर्थ किया जाता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पदार्थों की प्राप्ति के लिये इन चार आश्रमों का सेवन करना सब मनुष्यों को उचित है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने **'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका'** में गृहस्थाश्रम के व्यवहार के विषय में यजुर्वेद तृतीय अध्याय के कुछ मन्त्र प्रस्तुत किये हैं उनको यहाँ अर्थसहित स्वाध्याय प्रेमी सज्जनों के लिये लिख रहे हैं—

यद् ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये।
यदेनश्चकृमा वयमिदं तदवयजामहे स्वाहा॥
देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे।
निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा॥

(यजुर्वेद अध्याय 3। मन्त्र 45, 50)

अर्थ—(यद् ग्रामे०) गृहस्थ स्त्री-पुरुषों को धर्म उन्नति और ग्रामवासियों के हित के लिये जो-जो काम करना है तथा (यदरण्ये) वनवासियों के साथ हित और (यत्सभायाम्) सभा के बीच में सत्य विचार और अपने सामर्थ्य से संसार को सुख देने के लिये, (यदिन्द्रिये) जितेन्द्रियता से ज्ञान की वृद्धि करनी चाहिये, सो-सो सब काम अपने पूर्ण पुरुषार्थ के साथ यथावत् करें और (यदेनश्चकृमा) पाप करने की बुद्धि को हम लोग मन, वचन और कर्म से छोड़कर सर्वथा सबके हितकारी बने।

परमेश्वर उपदेश करता है कि (देहि मे०) जो सामाजिक नियमों की व्यवस्था के अनुसार ठीक-ठीक चलना है, यही गृहस्थ की परम उन्नति का कारण है। जो वस्तु किसी से लेवें अथवा देवें, सो भी सत्यव्यवहार के साथ करें। (नि मे धेहि, नि ते दधे) अर्थात् मैं तेरे साथ यह काम करूँगा और तू मेरे साथ ऐसा करना ऐसे व्यवहार को भी सत्यता से करना चाहिये। (निहारं च हरासि मे निहारं०) यह वस्तु मेरे लिये तू दे वा तेरे लिये मैं दूँगा, इसको भी यथावत् पूरा करें। अर्थात् किसी प्रकार का मिथ्या व्यवहार किसी से न करें। इस प्रकार गृहस्थ लोगों के सब व्यवहार सिद्ध होते हैं। क्योंकि जो गृहस्थ विचार पूर्वक सबके हितकारी काम करते हैं, उनकी सदा उन्नति होती है।

गृहा मा बिभीत मा वेपध्वमूर्जं बिभ्रत एमसि।
ऊर्जं बिभ्रद्वः सुमनाः सुमेधा गृहानैमि मनसा मोदमानः॥
येषामध्येति प्रवसन्येषु सौमनसो बहुः।
गृहानुपह्वयामहे ते नो जानन्तु जानतः॥
उपहूता इह गाव उपहूता अजावयः।
अथो अन्नस्य कीलाल उपहूतो गृहेषु नः।
क्षेमाय वः शान्त्यै प्रपद्ये शिवꣳ शग्मꣳ शंयोः शंयोः॥

(यजुर्वेद अध्याय 3। मन्त्र 41, 43)

अर्थ—(गृहा मा बिभीत०) हे गृहाश्रम की इच्छा करने वाले मनुष्य लोगो! तुम लोग स्वयंवर अर्थात् अपनी इच्छा के अनुकूल विवाह करके गृहाश्रम को प्राप्त हो और उससे डरो व कंपो मत। किन्तु उससे बल, पराक्रम करने वाले पदार्थों को प्राप्त होने की इच्छा करो। तथा गृहाश्रमी पुरुषों से ऐसा कहो कि मैं परमात्मा की कृपा से आप लोगों के बीच पराक्रम, शुद्ध मन, उत्तम बुद्धि और आनन्द को प्राप्त होकर गृहाश्रम करूँ।

(येषामध्येति०) जिन घरों में बसते हुए मनुष्यों को अधिक आनन्द होता है, उनमें वे मनुष्य अपने सम्बन्धी मित्र बन्धु और आचार्य आदि का स्मरण करते हैं और उन्हीं लोगों को विवाहादि शुभ कार्यों में सत्कार से बुलाकर उनसे यह इच्छा करते हैं कि ये सब हमको युवावस्थायुक्त और विवाहादि नियमों में ठीक-ठीक प्रतिज्ञा करने वाले जानें, अर्थात् हमारे साक्षी हैं।

(उपहूता०) हे परमेश्वर! आपकी कृपा से हम लोगों को गृहाश्रम में पशु, पृथिवी, विद्या, प्रकाश, आनन्द, बकरी और भेड़ आदि पदार्थ अच्छी प्रकार से प्राप्त हों तथा हमारे घरों में उत्तम रसयुक्त खाने-पीने के योग्य पदार्थ सदा बने रहें। 'वः' यह पद पुरुषव्यत्यय से सिद्ध होता है। हम लोग उक्त पदार्थों को उनकी रक्षा और अपने सुख के लिये प्राप्त हों। फिर उस प्राप्ति से हमको परमार्थ और संसार का सुख मिले। 'शंयोः' यह निघण्टु में प्रतिष्ठा अर्थात् सांसारिक सुख का नाम है।

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये।

—आचार्य बलदेव

स्वास्थ्य चर्चा रसायनाधिकार

❑ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, मो० : 9416133594

गतांक से आगे....

अग्निमान्द्य

(Hypodor-hydria, Acholic Dyspepsia)

आमाशय रस में दो पाचक रस ही विशेष हैं—(1) लवणाम्ल अर्थात् Hydrochloric acid और (2) पैपसीन। पैपसीन हाइड्रोक्लोरिक एसिड की उपस्थिति में ही कार्य कर सकता है, इसके अभाव में पैपसीन का होना न होने के बराबर है। अतः Hydrochloric acid का ह्रास ही सदा आमाशय रस के ह्रास को दर्शाता है।

आमाशय रस किन-किन कारणों से कम बनता है, इसका उल्लेख पूर्व लेखों में किया जा चुका है, लेकिन विषय के महत्त्व की दृष्टि से उन्हें पुनः लिखा जाता है।

(1) सहज कई व्यक्ति ऐसे होते हैं, जिनमें जन्म से ही आमाशयिक रस कम बनता है। प्रायः ऐसे रोगी पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलते आते हैं, उनमें कोई विशेष लक्षण उपस्थित नहीं होते, प्रकृति उनकी इस न्यूनता को पूरा करने के लिए अन्यत्र, अन्त्र में पाचक शक्ति अधिक उत्पन्न कर देती है, परन्तु ऐसे मनुष्यों में आमाशय विस्तृति का भय अवश्य रहता है, यदि खान-पान में विषमता हो जाए तो वे बहुत शीघ्र अजीर्ण रोग से पीड़ित हो जाते हैं। यदि ऐसे मनुष्य अपने स्वास्थ्य का थोड़ा-सा भी ध्यान रखें तो फिर उन्हें कोई दुःख नहीं होता।

(2) भय, शोक आदि कारणों से आमाशय रस कम बनता है।

(3) आमाशय गत रोग-जीर्ण, आमाशय शोथ, आमाशयिक कैंसर, जीर्ण यकृत् रोग तथा पित्त प्रणाली के रोगों में भी आमाशयिक रस कम बनता है।

(4) पाण्डु, दुष्ट विलोहितता, जीर्ण क्षीणकारी रोगों व तीव्र संक्रामिक ज्वरों में शारीरिक दुर्बलता के फलस्वरूप आमाशय भी दुर्बल होता है और आमाशय रस कम बनता है।

(5) बहुत काल तक गुरु भोजन खाने से आमाशय की श्लैष्मिक कला क्षीण हो जाती है, अजीर्ण रहता है, यदि रोगी न संभले तो सर्वदा के लिए अग्निमान्द्य हो जाता है। ऐसे रोगियों को प्रायः क्रमशः विबन्ध और अतिसार रहता है।

(6) मृदु प्रकृति वाले मनुष्यों में बिना किसी विशेष कारणों से भूख मिट जाती है और बार-बार ऐसा होने से अग्निमान्द्य स्थिर हो जाता है। ऐसे रोगियों में वस्तुत अव्यायाम, दिवास्वप्न और अत्यालस्य आदि स्वभाव रोगोत्पत्ति का कारण होते हैं।

लक्षण—साधारणतया अग्निमांद्य के लक्षण मुख्य रोगों के लक्षणों में छिपे रहते हैं जब बढ़ जायें तो उनसे भिन्न दृष्टिगोचर होते हैं। सहज अवस्था में विशेष लक्षण नहीं होते, परन्तु इनमें पुनः-पुनः अजीर्ण, अतिसार, उदरशूल, वमन और उत्क्लेश आदि लक्षणों के वेग आते रहते हैं।

आरम्भ में अग्निमान्द्य के कोई विशेष लक्षण नहीं होते परन्तु थोड़े से भी गुरु भोजन से या अति शीर्घता पूर्वक भोजन करने से अजीर्ण, आम अतिसार, उत्क्लेश, वमन और उदरशूलादि लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। साधारण अवस्था में मुखवैरस्य, अरुचि तथा भोजनोत्तर 1-2 घण्टे तक पेट भारी रहता है। उत्क्लेश रहता है, परन्तु वमन बहुत कम होती है अन्त में क्षुधा मन्द पड़ जाती है और जीर्ण आमाशय शोथ तथा आमाशय विस्तृति के लक्षण प्रकट हो जाते हैं। दुष्ट विलोहितता (Pernicious Anaemia) इसका विशेष उपद्रव है जिनका आमाशयिक रस अति क्षीण हो जाये उनको तो दुष्ट विलोहितता हो ही जाता है।

जिन कारणों से अग्निमान्द्य हो रहा है, उनको दूर करना चाहिये। अग्रिमांद्य स्वतः ठीक हो जायेगा। परन्तु जहां कारण दूर न किये जा सकें यथा आमाशयिक रस का अभाव, तो वहाँ पर आमाशयिक रस के अवयव अर्थात् हाइड्रोक्लोरिक एसिड और पैपसीन सदा के लिए देने पड़ते हैं।

यदि आमाशयिक कला सर्वथा क्षीण नहीं हुई और अभी कुछ रस उत्पादक सैलें थोड़ी शेष हैं तो उपयुक्त औषध चिकित्सा उपचार और विश्राम से शनैः-शनैः अवस्था सुधर सकती है। रस उत्पादक सैलों का भी शनैः-शनैः पुनः निर्माण हो जाता है, देर अवश्य लगती है। परन्तु जहाँ वे सैलें एकदम सारी की सारी नष्ट हो चुकी हैं वहाँ कुछ भी नहीं हो सकता।

पढ़ो सत्यार्थप्रकाश....

टेक- पढ़ो तुम सत्यार्थप्रकाश प्रेम से, दुनिया के नर-नारी।
भूमिका में यों बतलाया, ना मन किसी का मैंने दुखाया।
1. बताया निज प्रयोजन खास, सत्य पर चले दुनिया सारी।
प्रथम ओ३म् नाम ईश्वर का, मुख्य बताया जगदीश्वर का।
2. सर्वेश्वर का कण-कण वास, बताया वो जगदाधारी।
दूजे बच्चे के गुरु महान्, हों माता-पिता आचार्यवान्।
3. जान फिर जग में उसको पास जिसकी ज्ञानवती महतारी।
तीजे रह करके ब्रह्मचारी, विद्या सीखे न्यारी-न्यारी।
4. भारी धारो ये उपवास, बाद में होंगी सुखकारी।
चौथे गृहस्थ आश्रम धार, रहे पति-पत्नी अन्दर प्यार।
5. विचारकर इस पर तू अधिकांश पुण्य का बन चला अधिकारी।
पाँचवें निकल गृहस्थ से जाना, धारकर वान संन्यासी बाना।
6. माना घूमो बारह मास, ज्ञान से मेटो अँधियारी।
सातवें चार ऋषि यहाँ आये, जो ईश्वरीय ज्ञान को लाये।
7. पढ़ाये ब्रह्मा भर उल्लास, उनकी इतनी जिम्मेदारी।
आठवें कर्ता-धर्ता-हर्ता, पैदा होय कभी न मरता।
8. रचता भूमि और आकाश, बताया वो सर्वाधारी।
नौवें कर दिया दूर अंधेरा, बता दिया बन्ध-मोक्ष का बेरा।
9. भतेरा कर दिया पर्दाफाश, कुंजी खोली न्यारी-न्यारी।
दसवें बुद्धिवर्द्धक खाना, कभी किसी जीव को नहीं सताना।
10. माना भंग चरस और मांस से बुद्धि बिगड़ जाये सारी।
ग्यारहवें तोड़ा गढ़ पाखण्ड का दुनियाभर के अंड-बंड का।
11. खंड का बिगड़ गया इतिहास, नाश ये ले गये पोप पुजारी।
बारहवें चार्वाक् बौद्ध और जैनी कह दई इनकी जो कुछ कहनी।
12. पैनी धार से किया कटाक्ष कर में लेकर तेग दुधारी।
तेरहवें बाइबिल के बिल गहरे, ईसाई घोर अंधेरे रहरे।
13. सहरे विद्या के बिन त्रास, हठ से हटते ना हठधारी।
चौदहवें किया बात का तोड़, कुरान का दिया निकाल निचोड़।
14. जोड़ में मुस्लिम बड़े बदमाश, बहिश्त में कितने व्यभिचारी।
देवानन्द पुस्तक ये घर-घर में, होनी चाहिये दुनिया भर में।
15. कर में तो कर ले विश्वास, है ये जन-जन की हितकारी।

—स्वामी देवानन्द भजनोपदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गीता सार

- क्यों व्यर्थ चिंता करते हो ? किससे व्यर्थ डरते हो, कौन तुम्हें मार सकता है ? आत्मा न पैदा होती है, न मरती है।
- तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो ? तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया ? तुमने क्या पैदा किया था, जो नाश हो गया ? न तुम कुछ लेकर आये, जो लिया यहीं लिया, जो दिया यहीं पर दिया, जो लिया इस (भगवान्) से लिया, जो दिया इसी को दिया, खाली हाथ आये, खाली हाथ चले, जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझकर मग्न हो रहे हो। बस यही प्रसन्नता ही तुम्हारे दुःखों का कारण है।
- परिवर्तन ही संसार का नियम है, जिसे तुम मृत्यु समझते हो, वही तो जीवन है। एक क्षण में तुम करोड़ों के स्वामी बन जाते हो, दूसरे ही क्षण तुम दरिद्र बन जाते हो। मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा, अपना-पराया मन से मिटा दो, विचार से हटा दो, फिर सब तुम्हारा है, तुम सबके हो।
- न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम शरीर के हो, यह अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है और इसी में मिल जाएगा। परन्तु आत्मा स्थिर है, फिर तुम क्या हो ? तुम अपने आपको भगवान के अर्पित करो। यह सबसे उत्तम सहारा है जो इसके सहारे को जानता है, वह भय, चिंता, शोक से सर्वदा मुक्त है।
- जो कुछ भी तू करता है, उसे भगवान को अर्पित करता चल, इसी में तू सदा मुक्त अनुभव करेगा।

भेंटकर्ता : भलेराम आर्य (सांघीवाले)
एफ-4, इन्द्रप्रस्थ कॉलोनी, सोनीपत रोड, रोहतक

जैसे को तैसा

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला (हरयाणा)

महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज के सातवें नियम में लिखा है—"**सबके साथ प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए।**"

ऋग्वेद 5/30/6 '**मायाभिर्मायिनं सक्षदिन्द्रः।**' हे मनुष्यो! मायावियों को मायाओं से मार गिरा।

महर्षि व्यास का कथन है—

यस्मिन् यथा वर्तते यो मनुष्यः
तस्मिंस्तथा वर्तितव्यं स धर्मः।
मायाचारों मायया वर्तितव्यः
साध्वाचार साधुना प्रत्युपेयः॥ महा०

जो मनुष्य जिसके साथ जैसा व्यवहार करे उसके प्रति वैसा ही व्यवहार करना चाहिये, यह धर्म है। ढगी के साथ व्यवहार करने वाले के साथ ठगी का व्यवहार करना चाहिए और भला व्यवहार करने वाले के साथ भलाई का व्यवहार करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज का सातवां नियम बड़ी बुद्धिमत्ता से थोड़े शब्दों में बनाया, उस नियम का गहराई से अवलोकन करने की आवश्यकता है।

प्रथम लिखा—सबके साथ प्रीतिपूर्वक व्यवहार करने को कहा क्योंकि वेद का यही आदेश है कि सबके साथ मित्रभाव से रहो, द्वेष भावना को त्याग दो। **दूसरे कहा** धर्मानुसार वर्तना चाहिए। मनुष्य को अपने सब कार्य धर्मानुसार ही करने चाहिएं, दूसरे के धन को कभी छलकपट से नहीं हड़पना चाहिए, चोरी, झूठ-फरेब, दुष्ट भावना, पर-स्त्रीगमन आदि नीच कार्य कभी नहीं करने चाहियें और आगे क्या लिखा? यथायोग्य वर्तना चाहिए अर्थात् जैसे को तैसा, कहावत भी है—"**जो तोकू कांटे वोए तू बो उसको बबूल।**" दूसरी कहावत भी है—"**ईंट का जवाब पत्थर।**"

चाणक्य जी लिखते हैं—

कृते प्रतिकृतं कुर्याद हिंसने प्रतिहिंसनम्।
तत्र दोषो न पतति दुष्टे दुष्टम् समाचरेत्॥

जैसे के साथ तैसा व्यवहार करना चाहिये। उपकारी के प्रति प्रत्युपकार और हिंसक के साथ हिंसा का व्यवहार करना चाहिये। ऐसा करने से कोई दोष नहीं लगता, क्योंकि दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार ही उचित है। महर्षि दयानन्द जी जब घने विकट जंगल में फँस गये थे और रीछ उनके सामने आया तो महर्षि ने हुंकार भरी और अपना सोटा घुमाया तो रीछ भयभीत होकर भाग गया। उस समय यदि रीछ के साथ महर्षि प्रीति का व्यवहार करते तो रीछ महर्षि को नुकसान पहुँचा सकता था, उनकी जान ले सकता था। राजा कर्णसिंह से तलवार छीनकर उसे तोड़कर न फैंकते तो वह दुष्ट भावना से महर्षि पर तलवार से वार कर सकता था। '**सर्वाङ्गे दुर्जने विषम्**' दुर्जन के सभी अंगों में विष भरा होता है। सांपों के दांतों में, मक्खी के सिर में, बिच्छू की पूंछ में विष होता है, अन्तर देखिये। मनुष्य इन विषैले जानवरों से भी अधिक विषैला है, इसलिए दुर्जन से सदैव सावधान रहना चाहिए, चाहे दुर्जन प्रिय बोलता है परन्तु उनका विश्वास नहीं कर लेना चाहिये क्योंकि उसकी जीभ में मधुरता रहती है, परन्तु अन्तःकरण में विष भरा होता है।

देखिये! धर्म का पालन करने वाला परोपकारी और विपत्ति में दूसरों की सहायता करता है और जो अधर्मी होता है, वह अपना तो नाश करता ही है, सदैव दूसरों के विनाश की योजना बनाता रहता है, क्योंकि वह किसी की उन्नति, विकास को देखकर जलता रहता है, वेद तो यह कहता है कि दूसरों को देखकर जो उन्नत है, विद्वान् है, पुरुषार्थी है, ईमानदार है और धर्म पुरुषार्थ सहित धन अर्जित करते हैं, उनसे शिक्षा लो। जरा सोचिये! अपनी बुद्धि का प्रयोग करें, जिस शरीर में धर्म नहीं हुआ, यज्ञ न हुआ और परोपकार न हो सका उस शरीर को धिक्कार है, ऐसे शरीर को पशु-पक्षी भी नहीं छूते। दूसरों की पीड़ा, दुःख को धर्मानुसार वर्तने वाला ही मनुष्य समझ सकता है, अन्य नहीं।

आठ प्रकार के लोग हैं जो दूसरों की पीड़ा, दुःख को नहीं जानते—(1) राजा, (2) वेश्या, (3) यमराज, (4) अग्नि (5) चोर, (6) बालक, (7) याचक और आठवाँ ग्रामकण्टक (ग्रामवासियों को पीड़ा देकर निर्वाह करने वाला दुष्ट प्रवृत्ति वाला)।

(1) **राजा**—राजा अपनी गद्दी (कुर्सी) को बचाने के लिए जनता पर अत्याचार ढा सकता है, जैसा कि दिल्ली में आपने रामलीला मैदान का दमन कार्य देखा होगा, यू.पी. में, पूणे में, अन्य प्रान्तों में ऐसी अनेक घटनायें हुई हैं और होती रहेंगी। अंग्रेजी शासकों, मुस्लिम शासकों के जुर्म सुनने-पढ़ने को मिलते थे, परन्तु उनको विदेशी शासक कहकर जलती आग पर पानी फैंककर शान्त कर लेते थे, लेकिन वर्तमान स्वदेशी शासकों को क्या कहें, देशी या विदेशी। गतिविधियों से तो विदेशी ही दिखाई देते हैं, विदेशी, देश का धन लूटकर अपने देश ले जाते थे, परन्तु देशी अपने देश के धन को लूटकर विदेशों में जमा कर रहे हैं, अन्तर आप ही देखें। आप इनको क्या कहेंगे। विदेशियों को स्वाभाविक ही है कि हमारे देश से कोई प्रेम नहीं था, क्या देश के धन को लूटने वाले देशप्रेमी, देशभक्त, देश को समर्पित हैं? अगर नहीं, तो ये देशी कैसे हो सकते हैं?

(2) **वेश्या**—वेश्या किसी की प्रेमिका नहीं हो सकती, उसका व्यवसाय है, वह अपने पक्के ग्राहक बनाने के लिए प्रेम (प्यार) लगाव का नाटक करती हैं। देखिये! बुद्धिमान् तो इनका दरवाजा खटखटाता नहीं, मूर्खों की कहीं भी कमी नहीं।

(3) **यमराज**—कहावत है कि जब मृत्यु का समय आता है तो यमराज उसे उठा ले जाता है। दुष्ट भावना वाला व्यक्ति ही यमराज है। कहते भी सुना है कि यह यम का दूत कहाँ से आ गया? आपके दुष्ट कर्म ही यमराज हैं, जो मृत्यु के समय मनुष्य को सामने खड़े दिखाई देते हैं, वही यमराज हैं, अन्य नहीं।

(4) **अग्नि**—अग्नि जड़ पदार्थ है, उसका स्वभाव जलाना है। वह तो किसी के दुःख-सुख को जान ही नहीं सकता, शेष जो चेतन तत्त्व हैं, उनमें से मनुष्य दूसरे के दुःख को न जानकर केवल अपना घर भरने का प्रयत्न करते हैं।

(5) **चोर**—चोर का दूसरों के धन को चुराने/लूटने का काम है चाहे दूसरा सड़क पर आ जाये, दाने-दाने को मोहताज हो जाये, वह उनका दुःख क्या जाने, वह मौत के घाट भी उतार देता है, यदि कोई उसके कार्य में बाधक बने।

(6) **बालक**—कहावत भी है, बालक-बुद्धि। जब बच्चा किसी वस्तु को लेने की हठ करता है, तो वह यह नहीं जानता कि उसके माता-पिता की उस वस्तु को खरीदने की क्षमता है या नहीं। जिसको कहते हैं, बाल-हठ, वह भी अपने माता-पिता के दुःख को नहीं जानता।

(7) **याचक**—याचक को भी किसी से कुछ लेना-देना नहीं, वह भी अपनी स्वार्थ भावना की पूर्ति में कार्य करता है।

(8) **ग्रामकण्टक**—ग्रामकण्टक का तो निर्वाह ही ग्रामवासियों को पीड़ा देकर ही होता है, लोग डर से सब कुछ करने पर मजबूर होते हैं।

एक उर्दू कवि ने कहा है—

नहीं जौफ़ से झुक मेरी कमर गई,
मैं झुक ढूंढ़ता हूँ मेरी जवानी किधर गई।

कहते हैं कि मनचले ने बूढ़े से उसकी झुकी कमर को देखकर पूछा, बूढ़े! यह कमान कितने में खरीदी है? वृद्ध बोला बेटे! मेरी अवस्था में पहुँचने पर यह कमान तुझे बिना मूल्य चुकाये ही मिल जायेगी। भाव यह है कि समय आने पर मनुष्य को अपने किये कर्मों का फल मिल जाता है। मनुष्य को अपने धार्मिक गुणों को नहीं छोड़ना चाहिये।

केतकि (केवड़े) का उदाहरण देता हूँ। हे केतकि (केवड़े) यद्यपि तू सायों का घर है, फल से रहित है, काँटों से युक्त है, टेढ़ी भी है, उत्पन्न भी कीचड़ में होती है, प्राप्त भी कठिनता से होती है, इतना सब कुछ होने पर भी तू केवल अपने गन्ध गुण के कारण सब प्राणियों के मन को मोह रही है। केतकि में इतने दोष, परन्तु एक गन्ध गुण सबको मोह लेता है। इससे निश्चय होता है एक भी गुण सारे दोषों को दूर कर देता है। अपने गुणों को कभी न त्यागे और महर्षि दयानन्द जी की भाँति सहनशील बनें, वह विरोधियों के ईंट, पत्थर, गाली खाकर भी अपने शील स्वभाव को कभी नहीं भंग होने देते थे और सबके साथ यथायोग्य वर्तते थे।

वैवाहिक विज्ञापन

क्या आपको योग्य वर-वधू की तलाश है?

तो फिर भला देर किस बात की? आज ही वैवाहिक कालम में अपना विज्ञापन भेजिए। एक बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु० 250/- तथा तीन बार में 700/- अपेक्षित है। धन्यवाद।

सम्पादक—आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' दयानन्दमठ, रोहतक

दूरभाष : 01262-216222

गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 60 विद्यार्थी मेरिट में

गुरुकुल के सागर ने नॉन मेडिकल में 96% अंक लेकर कुरुक्षेत्र जिले में किया टॉप

कुरुक्षेत्र 27 मई, 2013 केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नयी दिल्ली द्वारा सोमवार को घोषित 12वीं कक्षा के परीक्षा परिणाम में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के 60 होनहार छात्रों ने मेरिट सूची में अपना नाम दर्ज कराया है। यह जानकारी गुरुकुल के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य ने देते हुए बताया कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र एक मात्र ऐसा विद्यालय है, जिसका जिला में परीक्षा-परिणाम शत-प्रतिशत रहा। यह न केवल जिला कुरुक्षेत्र के लिए बल्कि प्रदेश के लिए भी गौरव की बात है। उन्होंने बताया कि परीक्षा में कुल 99 विद्यार्थी बैठे, जिनमें से 60 छात्रों ने मेरिट सूची में तथा शेष सभी विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की।

गुरुकुल के विद्यार्थी नरेन्द्र नैन ने रसायन विज्ञान में 100 अंक प्राप्त किये। गुरुकुल के विद्यार्थी सागर ने नॉन मेडिकल में 96% अंक लेकर पूरे कुरुक्षेत्र जिले में प्रथम स्थान हासिल किया। उन्होंने बताया कि 10 छात्रों ने 90% से ऊपर अंक लेकर गुरुकुल को गौरवान्वित किया। पेंटिंग में रजत ने 99, गणित में रजनीश ने 98, संस्कृत में सागर ने 98, व्यावसायिक अध्ययन में सत्यानन्द ने 98, अर्थशास्त्र में अनुराग ने 96, भौतिक विज्ञान रजनीश, सचिन व सागर ने 95, अंग्रेजी में सचिन व अंकित ने 95, शारीरिक शिक्षा में अक्षय ने 95 अंक प्राप्त कर गुरुकुल की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगाए। गुरुकुल के छात्रों ने बेहतर परीक्षा परीणाम आने पर एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर अपनी खुशी का इजहार किया।

गुरुकुल प्रबन्ध समिति के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य, उप-प्राचार्य शमशेर सिंह ने सभी प्रतिभावान् छात्रों, आचार्यों व अभिभावकों को उनकी इस उपलब्धि पर हार्दिक शुभकामनाएँ व बधाई दी।

—गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरयाणा)

40 वां वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज हरिनगर नई दिल्ली-64 का 40वाँ वार्षिक उत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। श्री श्यामवीर 'राघव' ने अपने मधुर भजनों से मुग्ध कर दिया। श्री योगेन्द्र शास्त्री ने रोचक उपदेशों से सबके मन को मोह लिया। श्री देवराज आर्य मित्र श्रोताओं से आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द जी के सम्बन्ध में प्रश्नों के उत्तर पूछे। सही उत्तर देने वाले को 50/- रुपये का नकद पुरस्कार दिया। अन्त में प्रधान जी ने सबका धन्यवाद किया। शान्तिपाठ और ऋषिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—देवराज आर्यमित्र, WZ-428, हरीनगर, नई दिल्ली-64

आवश्यक सूचना

वेद, सत्यार्थप्रकाश, महर्षि दयानन्द एवं अन्य महापुरुषों के विरुद्ध रामपालदास द्वारा किये जा रहे दुष्प्रचार की किसी भी प्रकार की कोई सामग्री जैसे-सी.डी., इश्तिहार आदि किसी विद्वान्/सज्जन के पास उपलब्ध है तो कृपया 15 दिन के अन्दर-अन्दर सभा कार्यालय में डाक द्वारा अथवा ईमेल से भेजें अधिक जानकारी हेतु फोन नं० 9416055044 पर सम्पर्क करें। धन्यवाद।

निवेदक : प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

हरयाणा की समस्त आर्यसमाजें सभा की भजनमण्डलियों का लाभ उठावें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक सभा की भजनमण्डलियों के माध्यम से वेदप्रचार और आर्यसमाज का प्रचार-प्रसार का कार्य उत्तम ढंग से किया जा सकता है। विशेष तौर पर हरयाणा की आर्यसमाजें अपने साप्ताहिक सत्संगों, वार्षिकोत्सवों और वेदप्रचार सप्ताह में इसका बहुत अच्छे ढंग से लाभ उठा सकती हैं। सभा में निम्नलिखित भजनमण्डलियां प्रचार कार्य कर रही हैं—

क्रम	नाम		मोबाइल नं०
1.	श्री सहदेव सरस भजनोपदेशक	—	09582142371
2.	श्री सत्यपाल आर्य भजनोपदेशक	—	9354824574
3.	श्री रामकुमार आर्य भजनोपदेशक	—	8053269231
4.	श्री महेन्द्र आर्य भजनोपदेशक	—	9416344174
5.	श्री जसविन्द्र आर्य भजनोपदेशक	—	9991273589
6.	श्री चतरसिंह आर्य भजनोपदेशक	—	9812380029
7.	श्री रामेश्वर आर्य भजनोपदेशक	—	9416955090
8.	श्री स्वामी देवानन्द भजनोपदेशक	—	....

आर्यसमाजें अपने वार्षिकोत्सव, वेदप्रचार सप्ताह तथा विशेष अवसर पर आयोजित समारोह में अवश्य आमन्त्रित करके वेदप्रचार को बढ़ाने में सहयोग प्रदान करें।

—सत्यवीर शास्त्री, सभामंत्री

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज लूखी जिला महेन्द्रगढ़	22 से 23 जून 2013
2.	आर्यसमाज बालधन कलां जिला रेवाड़ी	6 से 7 जुलाई 2013
3.	जिला वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ के तत्त्वावधान में जिला स्तरीय आर्य महासम्मेलन स्थान-दौंगड़ा अहीर (महेन्द्रगढ़)	6 से 7 जुलाई 2013

—प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

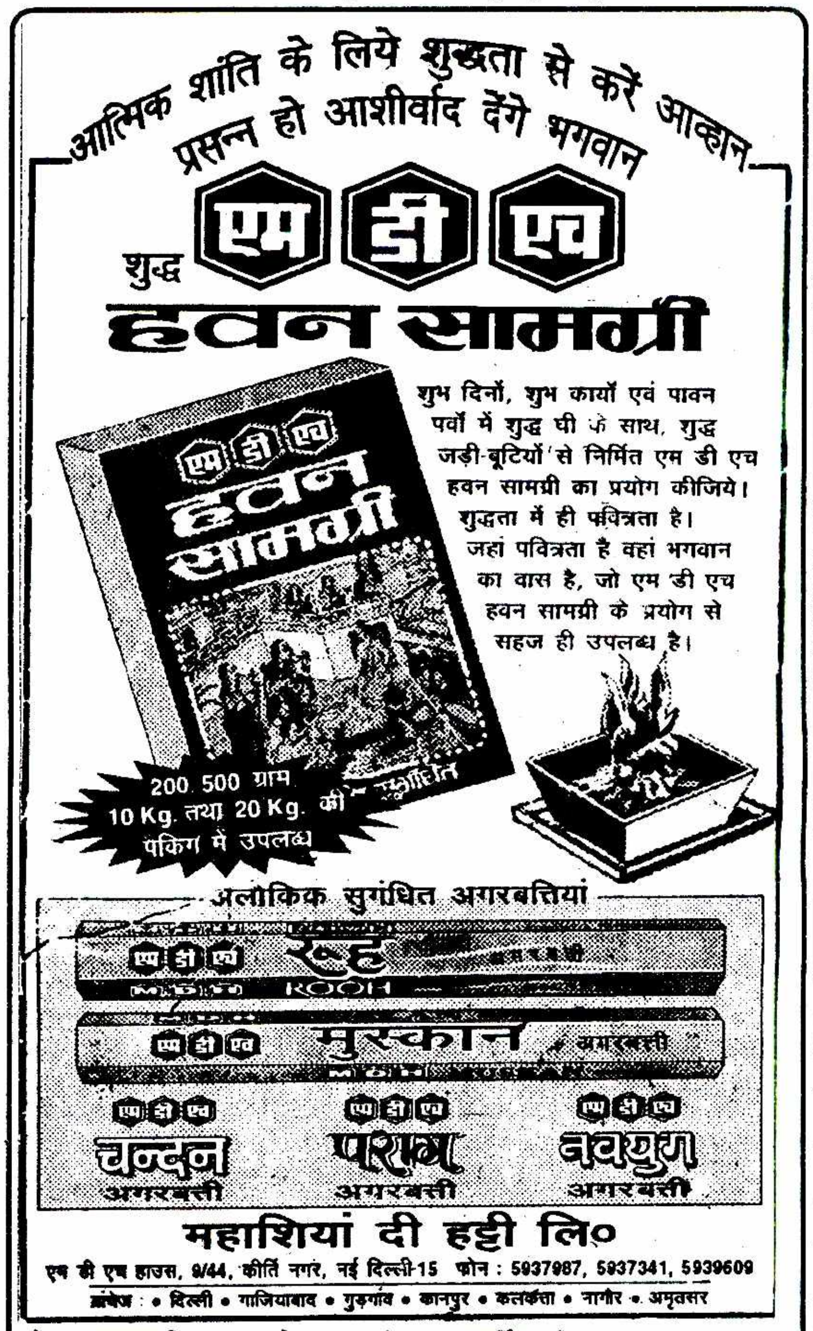

आत्मिक शांति के लिये शुद्धता से करें आह्वान
प्रसन्न हो आशीर्वाद देंगे भगवान

शुद्ध एम डी एच हवन सामग्री

शुभ दिनों, शुभ कार्यों एवं पावन पर्वों में शुद्ध घी के साथ, शुद्ध जड़ी-बूटियों से निर्मित एम डी एच हवन सामग्री का प्रयोग कीजिये। शुद्धता में ही पवित्रता है। जहां पवित्रता है वहां भगवान का वास है, जो एम डी एच हवन सामग्री के प्रयोग से सहज ही उपलब्ध है।

अलौकिक सुगंधित अगरबत्तियां

महाशियां दी हट्टी लि०
एम डी एच हाउस, 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 फोन : 5937987, 5937341, 5939609
ब्रांचेज : • दिल्ली • गाजियाबाद • गुड़गांव • कानपुर • कलकत्ता • नागौर • अमृतसर

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओमप्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

आर्य-संसार

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से आर्य युवक चरित्र निर्माण (आर्यवीर दल) के शिविरों की शृंखला

आप सबको यह जानकर हर्ष होगा कि गुरुकुल आश्रम आमसेना एवं उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से मानव जीवन के आधार युवकों के निर्माण में लगा हुआ है। गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी आर्यवीर दल के निम्न शिविर लगाये जा रहे हैं।

1. प्रथम शिविर नवापारा जिले के अभयारण्य कन्या छात्रावास सोनाबेड़ा में 3 से 7 अप्रैल तक सम्पन्न हुआ इस शिविर में लगभग 50 युवकों ने भाग लिया।

2. झारखण्ड के शान्ति आश्रम लोहरदगा में 17 से 22 मई तक आर्यवीर दल का यह शिविर सम्पन्न हुआ इस शिविर में 100 से अधिक युवकों ने भाग लिया। इस शिविर का संचालन आचार्य शरच्चन्द्र जी शास्त्री ने किया।

3. आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी, आचार्य मंजीत जी शास्त्री एवं चौधरी राजेन्द्र जी हुमायूंपुर के प्रयास से हरयाणा दिल्ली के लगभग 40 युवकों ने गुरुकुल आश्रम आमसेना में 16 से 23 मई तक आकर चरित्र निर्माण की शिक्षा प्राप्त की। उत्तर भारत के युवकों का उड़ीसा में आकर प्रशिक्षण प्राप्त करना एक नया प्रयास था, जो सफल रहा। इस शिविर का उद्घाटन श्री राजेन्द्र जी धनखड़ (गेवरा) ने किया।

4. परममित्र मानव निर्माण आर्ष विद्यापीठ गेरवानी (रायगढ़) में 21 मई से 26 मई तक आर्य वीरों का यह शिविर आचार्य सुभाषचन्द्र जी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। इस शिविर में 80 से अधिक युवकों ने भाग लेकर अपना जीवन पवित्र रखने का संकल्प लिया।

5. कन्धमाल जिले में स्वामी ओमानन्द वैदिक छात्रावास नुआंगा में 1 से 6 जून तक इस आर्यवीर दल का आयोजन हुआ। इस शिविर में भी सैकड़ों युवकों ने भाग लिया। शिविर में भी भाग लेने वालों की संख्या अधिक थी। शिविर का संचालन पं० विशिकेशन जी शास्त्री एवं ब्र० श्रद्धानन्द जी ने किया।

इन सब शिविरों का संचालन, मार्गदर्शन एवं व्यवस्था पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के द्वारा होती है। गुरुकुल के आचार्य व्रतानन्द जी का भी पूर्ण आशीर्वाद मिलता है। इन शिविरों की सारी आर्थिक व्यवस्था भी गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से ही की जाती है।

—डॉ. कुञ्जदेव मनीषी

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' सभी सम्मानित सदस्यों को प्रत्येक मास की 7, 14, 21, 28 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है। एक सप्ताह तक पत्र न मिलने पर कृपया फोन नं० 01262-216222, 08901387993 पर सूचना दें। धन्यवाद। —व्यवस्थापक

निर्वाचन

दिनांक 16.06.2013 को आर्यसमाज प्रेमनगर, दुर्गा कालोनी रोहतक में यज्ञ के उपरान्त सर्वसाधारण सदस्यों की बैठक हुई जिसमें वार्षिक चुनाव की प्रक्रिया आरम्भ हुई। नई कार्यकारिणी का चुनाव श्री दलीप सिंह ढुल की अध्यक्षता में हुई। अत: सर्वसम्मति से श्री कर्णसिंह मोर को आर्यसमाज प्रेमनगर दुर्गा कालोनी का प्रधान चुना गया अन्य सदस्य—श्री जगतसिंह राठी व डॉ० सत्यपाल दहिया उपप्रधान, श्री सुरेन्द्र सिंह दहिया मन्त्री, श्री रामकुमार हुड्डा व श्री रघुवीर सिंह कादयान उपमंत्री, श्री भूपेन्द्र सिंह अहलावत कोषाध्यक्ष, श्री राजकुमार यादव व श्री वेदपाल नहरा पुस्तकाध्यक्ष, श्री रामकिशन आय-व्यय लेखा समिति व सूरजभान सिन्धु को मुख्य सलाहकार, सर्वसम्मति से श्री जिलेसिंह कुण्डू को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का प्रतिनिधि सदस्य चुना गया।

—सुरेन्द्र आर्य, मंत्री

शोक-प्रस्ताव

आर्यसमाज सफीदों जिला जीन्द के कोषाध्यक्ष श्री महावीर प्रसाद सिंहल सुपुत्र श्री ब्रह्मप्रकाश आर्य सफीदों गत कई दिनों से बीमार चल रहे थे। दिनांक 17.6.2013 को अचानक 40 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया जिससे आर्यजगत् में शोक की लहर व्याप्त हो गई। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा इस दु:ख की घड़ी में आर्य परिवार के साथ गहरी सहानुभूति प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करती है एवं परिवार को कष्ट सहन करने की शक्ति ईश्वर प्रदान करे ऐसी कामना करती है। **—मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा**

रससिद्ध संस्कृत कवि डॉ. धर्मवीर कुण्डू... पृष्ठ दो का शेष...

हैं। मेरे ऐसा मिथ्याचारियों से निरन्तर विरोध रहा और मैंने अपने लेखन से उनका सदा प्रत्याख्यान किया। कोलकाता के स्व० दीनबन्धु वेदशास्त्री, स्वामी सच्चिदानन्द योगी (पूर्वाश्रम में पं० राजेन्द्रनाथ शास्त्री), उनके पुत्र डॉ० वेदव्रत आलोक तथा भोपाल के वेदद्रोही आदित्यपालसिंह आदि ने एक सर्वथा कल्पित अज्ञात जीवनी का प्रकाशन कर ऋषि के प्रति घोर अपराध किया है। डॉ० कुण्डू के लिए यह उचित होता कि वे दयानन्द के जीवन पर लेखनी उठाने से पूर्व इस ग्रन्थ के अन्त्य भाग में उल्लिखित लार्ड नार्थब्रुक से दयानन्द की भेंट, 1857 में उनकी कथित भूमिका, हरिद्वार में लक्ष्मीबाई तथा नाना साहब व तात्या टोपे आदि से उनकी तथाकथित भेंट आदि की सच्चाई या मिथ्यात्व को जानने का यत्न करते। मैं डॉ० कुण्डू को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि महाराज के किसी प्रामाणिक चरित में उक्त कल्पित प्रसंगों का नाम तक नहीं है तथापि उनका यह प्रयास सराहनीय तथा प्रशंसनीय है।

संस्कृत पद्य में सत्यार्थप्रकाश का सुगम श्लोकबद्ध अनुवाद डॉ० कुण्डू का एक अन्य श्लाघनीय प्रयास है। विगत में 1925 में ऋषि की जन्म-शताब्दी के अवसर पर पं० शंकरदेव पाठक ने सत्यार्थप्रकाश का धारावाही संस्कृत गद्य में अनुवादकिया था, परन्तु इस कालजयी रचना को श्लोकबद्ध कर हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित करना प्रथम बार ही सम्भव हुआ है। सत्यार्थप्रकाश के चौदह समुल्लासों, भूमिका तथा स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकरण को इस प्रकार पद्य रूप देना एक चुनौती थी जिसे विद्वान् लेखक ने स्वीकार कर सफल किया है। उनकी अन्य कृतियों का अनुशीलन उन्हें वर्तमान युग के संस्कृत लेखकों में अग्रस्थान दिलाता है।

सभा की रसीद बुक गुम होने के बारे में आवश्यक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनोपदेशक श्री देवानन्द की एक रसीद बुक गुम हो गई है जिसका विवरण इस प्रकार है—

क्र.सं.	जारी तिथि	रसीद नं०	रसीद नं० जो काटी जा चुकी है	विवरण
1.	03.12.2012	52851-52900	52851 से 52864 तक का हिसाब कार्यालय में दिया हुआ है।	52865 से 52900 तक 36 रसीदों का हिसाब नहीं हुआ।

उपर्युक्त विवरण सहित रसीद बुक उपरोक्त भजनोपदेशक से सभा के प्रचार कार्यक्रम से दिल्ली में बस से उतरते समय सामान के साथ गुम हो गई है, जिसके बारे में उक्त भजनोपदेशक ने सभा कार्यालय में लिखित रूप में सूचित किया है कि इसकी सूचना पुलिस चौकी न्यू अशोक नगर पूर्वी दिल्ली को दर्ज करा दी है। इस रसीद बुक को अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक 21.04.2013 के अनुसार निरस्त करने का निर्णय किया है। अत: कोई भी आर्यसमाज/व्यक्ति इन रसीदों से कोई लेन-देन न करे। यदि कोई इनमें से रसीद काटता पाया जाये तो इसकी सूचना तत्काल सभा कार्यालय को देवें। इन रसीद बुकों से धन प्राप्ति अवैध मानी जाएगी। आप सभी का सहयोग अपेक्षित है।

—सत्यवीर शास्त्री, सभामन्त्री

आर्यसमाज का धुरन्धर कार्यकर्त्ता चला गया

गतांक से आगे....

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

जिस समय संदीप गुरुकुल सिंहपुरा छोड़कर जाने लगा मैंने और मित्र जितेन्द्र जी ने उससे बहुत आग्रह किया कि तीनों साथ ही रहेंगे, अन्यत्र किसी गुरुकुल में चलते हैं। उसने हमारा आग्रह बिल्कुल स्वीकार नहीं किया। वह अपने लिए हमारा कार्य नहीं छुड़ाना चाहता था। यह उसकी महानता थी, उसका ठोस व स्वावलम्बी व्यक्तित्व था। उसने हमारे साथ बने रहने का वचन व आश्वासन दिया। गुरुकुल से विदा लेने से एक दिन पहले मैं और शहीद संदीप '**तिलियार लेक**' में एक वृक्ष के नीचे घण्टों बैठे एक-दूसरे का दु:ख बाँटते रहे, आर्यसमाज का कार्य करने का संकल्प लेते रहे। काश! ये संस्था वाले व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना सीख जाएँ।

रोहतक में ही '**हरिभूमि**' पत्र में संदीप कम्प्यूटर पर हिन्दी टाइप करने का कार्य सीखने लगा। '**हरिभूमि**' पत्र एक आर्य परिवार निकालता है। उस परिवार को शायद अब तक यही पता नहीं कि आर्य सिद्धान्तों की रक्षा हेतु बलिदान देने वाले वीर युवक संदीप ने पत्रकारिता की शिक्षा उन्हीं के कार्यालय से ली थी। उस समय वह हर रोज गाँव शाहपुर से रोहतक यह कार्य सीखने के लिए आता था। मैं और जितेन्द्र जी लगभग हर रोज उसके संपर्क में रहते थे।

उस समय वह अपना काम सीखने के साथ-साथ आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित कार्यक्रमों में भी भाग लेता रहा। लगभग तीन महीने में ही वह कम्प्यूटर पर हिन्दी के समाचार सैट करने का कार्य सीख गया। अब जब भी मैं उसे आर्य बाल भारती विद्यालय, पानीपत में कम्प्यूटर पर हिंदी की टाइप करते देखता था तो हँसी करता था कि तूँ पहलवान होकर यह कार्य भी कर लेता है, स्वयं भी बहुत हँसता था। कई बार चालक के अभाव में स्वयं शहीद संदीप गाड़ी चलाता था उस समय भी कहता था कि समाज के लिए पता नहीं क्या-क्या सीखना पड़ेगा और हम दोनों खिल-खिलाकर हँस पड़ते थे। वह हँसी भी साथ ले गया। खैर, वह उस समय गाँव शाहपुर में भी तेज गति से आर्यसमाज का प्रचार करने लगा। 2009 में उसकी नियुक्ति '**पहली खबर**' नामक पत्र में हो गई। पत्र में काम करने वाले भी उसके व्यक्तित्व से काफी प्रभावित थे। वह दूरभाष पर उनसे मेरी बात करवाता रहता था। गाँव में जो कार्यक्रम करवाता उसमें भी उन्हें बुलाता था। गाँव में जब आचार्य बलदेव का कार्यक्रम होता तो वह रेहड़ी पर स्पीकर, माइक, बैटरी का प्रबन्ध करके उद्घोष करता था।

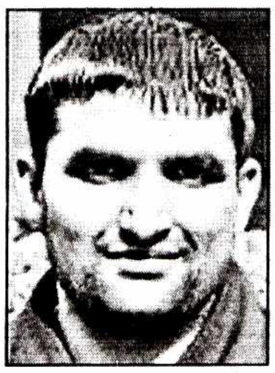

शहीद संदीप आर्य

जुलाई 2010 में उसने मुझे बताया कि उसकी नियुक्ति जम्मू क्षेत्र में '**अमर उजाला**' में हो गई। वहाँ उसका वेतन भी 14,000/- नियत हो गया। मैंने कहा कि आप गांव व आसपास के क्षेत्र को अच्छा संभाले हो। आपके जाते ही यहाँ समाज का कार्य बिखर जाएगा। लेकिन वह यह आश्वासन देकर बीच-बीच में संभालता रहेगा, जम्मू चला गया। यहाँ भी '**अमर उजाला**' के कार्यालय के कर्मचारियों से वह मेरी बात कराता रहता था, इस आश्वासन के लिए कि वह यहाँ भी समाज का कार्य कर रहा है। कुछ महीने बाद उसकी बातों से मुझे लगने लगा कि वह वहाँ अपने कार्य से ज्यादा सन्तुष्ट नहीं है। उसका एक मित्र सोनू जो वहाँ कार्य करता था उसे वह बार-बार कहता था कि अपने लिए ही जीना कोई जीना नहीं है। मैं आचार्य बलदेव जी आदि के साथ मिलकर आर्यसमाज के कार्य को ही ज्यादा समय देना चाहता हूँ। मैं बार-बार उसे '**गायत्री जप**' के बारे में कहता रहता था और भी सिद्धान्तों व दिनचर्या के बारे में तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रचार के बारे में लम्बी बातें उससे चलती रहती थी। यह उसके वापिस आने की भूमिका थी। **क्रमशः**

नवान्न यज्ञ व उपदेश

दिनांक 14 मई 2013 को भाऊ आर्यपुर रोहतक में श्री रामअवतार के घर पर नवान्न यज्ञ व वेदप्रचार किया गया। आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में सपत्नीक पाँच यजमान तथा अनेक युवा स्त्री-पुरुषों के सहयोग से बृहद् यज्ञ किया गया। आचार्य वेदमित्र जी ने गृहस्थ धर्म के मूल यज्ञ तथा यज्ञमय जीवन का वर्णन किया। आज तक भारतवर्ष में साधु, विद्वान्, पितर तथा गोसेवा गृहस्थ धर्मी करते आ रहे हैं। पाश्चात्य जगत् में न यज्ञ है, न अन्य प्रति सेवा भाव। दूसरों की सेवा करने में हमारे श्रीराम, श्रीकृष्ण जी आदि का वर्णन इतिहास में है।

इसी प्रकार 28 मई 2013 को गाँव मोखरा जिला रोहतक में श्री सतीश द्वारा नवान्न यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम किया गया। आचार्य जी द्वारा यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम हुआ। वेदपाठ आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया। यज्ञ में नवयुवकों ने जनेऊ धारण किये। आचार्य जी ने यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा प्रभु को मानने वाला ही सुखी रह सकता है और गृहस्थ में आज्ञाकारी सन्तान का सुख सब सुखों से उत्तम होता है।

आचार्य जी की वैदिक प्रेरणा से इस समय अनेक घरों में नवान्न यज्ञ होंगे जो एक अच्छा कर्म है। यज्ञोपरान्त सभी को भोजन प्रदान किया गया।

—मनोज आर्य Msc. पतञ्जलि योगाश्रम, भाऊ आर्यपुर, रोहतक

आभार-प्रदर्शन

सभी आर्यों, धार्मिक सज्जनों, गोभक्तों तथा खापों ने तन, मन, व धन का सहयोग कर करौंथा आन्दोलन में उद्देश्य की पूर्ति तक अर्थात् पाखण्डी रामपाल के अनुयायियों को आश्रम से निकालने तक संघर्ष किया। सबको कोटिशः बधाई एवं धन्यवाद। —आचार्य बलदेव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में बिक्री हेतु निम्न साहित्य उपलब्ध हैं। कृपया इसका लाभ उठावें।

क्र०	पुस्तक का नाम		मूल्य
1.	प्रो० शेरसिंह : एक प्रेरक व्यक्तित्व	—	20-00
2.	धर्म-प्रवेशिका	—	10-00
3.	धर्म-भूषण	—	12-00
4.	वैदिक सिद्धान्त सार	—	20-00
5.	सत्यार्थप्रकाश	—	30-00
6.	वैदिक उपासना पद्धति	--	8-00
7.	पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जीवन चरित	--	10-00
8.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	—	50-00
9.	संस्कारविधि	—	30-00
10.	हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान	—	30-00
11.	पं० गुरुदत्त विद्यार्थी जीवन चरित	—	25-00
12.	महर्षि दयानन्द तथा वेदों पर आक्षेपों का उत्तर	—	15-00
13.	आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो?	—	10-00
14.	पंजाब का हिन्दी रक्षा आन्दोलन	—	100-00
15.	स्मारिका-2002	—	10-00
16.	प्राणायाम का महत्त्व	—	15-00
17.	महाराणा प्रताप तथा उनके वंशज	—	10-50
18.	स्मारिका 1987	—	10-00
19.	स्मारिका 1976	—	10-00
20.	अमर हुतात्मा भगत फूलसिंह जीवनी	—	15-00
21.	अमर शहीद पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' जीवनी	—	30-00
22.	स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी (कल्याण मार्ग का पथिक)	—	80-00

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।